GOVT. OF INDIA- RNI NO. UPBIL/2014/56766
ISSN 2348-2397
UGC Approved Care Listed Journal

SIQ

शोध सरिता

An International Multidisciplinary Quarterly
Bilingual Peer Reviewed Refereed Research Journal

• Vol. 7 • Issue 27 • July to September 2020

Editor in Chief
Dr. Vinay Kumar Sharma
D. Litt. - Gold Medalist

sanchar
Educational & Research Foundation

24.	पर्यावरण समस्या एवं जलवायु परिवर्तन के प्रभाव	डॉ. जकील अहमद	93
25.	राँची शहर में जनजातियों के आर्थिक परिस्थितियों पर प्रवास का प्रभाव	भुवनेश्वर कुमार मण्डल	96
26.	भारत में जैविक खेतीः– प्रगति, संभावनाएं और चुनौतियां	संतोष कुमार	103
27.	मिथिलाक संस्कार गीत	छाया कुमारी	108
28.	साहित्य, समाज और संस्कृति में अंतर्सम्बन्ध	धर्मेन्द्र प्रताप सिंह	112
29.	औपनिवेशिक भारत में उच्च शिक्षा व्यवस्था में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की महत्वपूर्ण भूमिका (1904–1921)	ऐश्वर्य कीर्ति लक्ष्मी	115
30.	मुस्लिम साहित्य में सृजित राष्ट्रीय संचेतना की वर्तमान संदर्भ में प्रासंगिकता	डॉ0 उदय भान यादव	118
31.	योगिक षटकर्मों की अवधारणा एवं लाभ	डा0 अमरजीत यादव	121
32.	आधुनिक हिन्दी उपन्यासों में नारी मनोविज्ञान का चित्रण	प्रो॰ राजिन्द्र पाल सिंह जोश सुधा महला	123
33.	अरुण कमल की कविताओं में सामाजिक सरोकार	डॉ॰ ललिता कुमारी	128
34.	विज्ञान जगत में डॉ0 ए0पी0जे0 अब्दुल कलाम का योगदान	जयदीप सिंह डॉ0 धर्मपाल सिंह	132
35.	आसन एवं प्राणायाम के अष्टांगिक यथार्थ	डॉ0 राजेश्वर प्रसाद यादव	136
36.	ज्ञान और आध्यात्म के प्रकाश को आलौकित करती गुरुपूर्णिमा	डॉ. कृष्णा गायकवाड	139
37.	माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के आत्मविश्वास का अध्ययन	विनीता पांडे डॉ अराधना सेठी	141
38.	हिंदी दलित नाट्य लेखन और रंगमंच	डॉ. गंगाधर वानोडे	145
39.	प्राचीन भारतीय शिक्षा के पाठ्यक्रम एवं शिक्षण विधियों की वर्तमान समय में उपयोगिता	डॉ0 बीनू शुक्ला सर्वेश कुमार	148

ISSN - 2348-2397
APPROVED UGC CARE
SIQ
SHODH SARITA
SHODH SARITA
Vol. 7, Issue 27, July-September, 2020
Page Nos. 112-114
AN INTERNATIONAL BILINGUAL PEER REVIEWED REFEREED RESEARCH JOURNAL

साहित्य, समाज और संस्कृति में अंतर्सम्बन्ध

धर्मेन्द्र प्रताप सिंह*

शोध सारांश

साहित्य, समाज और संस्कृति तीनों परस्पर पूरक हैं तथा सहभाव में ही इनकी सार्थकता है। साहित्य का अस्तित्व समाज और समाज का संस्कृति के भीतर अनुप्राणित होता है। समाज के भीतर मनुश्य का अस्तित्व सिद्ध होता है और इसी के लिए साहित्य का सृजन भी होता है। मनुश्य जिस प्रकार समाज की परिधि में अपना अस्तित्व निर्मित करता है उसी प्रकार समाज संस्कृति के भीतर पुश्पित–पल्लवित होता है। विश्व प्रख्यात् साहित्यकार टी. एस. इलियट, एफ. आर. लेविस और समाजशास्त्री गोल्डमान ने अपने समय में साहित्य को सामाजिक–सांस्कृतिक दृश्टि से पुनर्ख्यायित किया। यही कार्य भारतीय परिप्रेक्ष्य में रामचन्द्र शुक्ल, रामविलास शर्मा और नामवर सिंह ने किया। इनके मध्य अंतःसम्बन्ध समझने के लिए साहित्य, समाज और संस्कृति का आशय और व्याप्ति को समझना आवश्यक है। इन्हें बिना समझे इनकी परस्पर अन्योन्याश्रिता को नहीं समझा जा सकता।

Keywords : रसात्मक, सहभाव, जनसमूह, सामाजिक क्रिया, संस्कृति, संकल्पनात्मक, अलौकिक आनंद, अंतःकरण, मुक्तावस्था, ज्ञानदशा, रसदशा, समुदाय, लोकजागरण, पुनर्जागरण, परंपरा।

सर्वप्रथम संस्कृत आचार्यों ने साहित्य को परिभाशित करने का प्रयास किया। 'सहितस्य भावः सः साहित्यम्' अर्थात् जिसमें सभी के हित का भाव निहित हो वही साहित्य है। यदि हम संस्कृत भाशा की ओर दृश्टिपात करें तो भामह शब्द और अर्थ से संयुक्त, विश्वनाथ रसात्मक वाक्य, विश्वनाथ रमणीय अर्थ को प्रस्तुत करने वाले को साहित्य मानते हैं। उक्त परिभाशाओं पर ध्यान दिया जाय तो यहाँ से लोक हित गायब हो गया था, वह केवल आनन्द प्रदान करने का साधन और राज दरबारों की शोभा बनकर रह गया था जो संस्कृत भाशा के अव्यवहारिक होने का कारण बना। कहने का आशय यह है कि जो साहित्य जनमानस और उनसे सम्बन्धित मुद्दों पर विचार नहीं करेगा वह शीघ्र ही हमारे बीच से लुप्त हो जायेगा है। यही स्थिति हिन्दी के आदिकालीन और रीतिकालीन साहित्य की होती है लेकिन भक्तिकाल और आधुनिक काल के साहित्य ने परोपकार के उक्त भाव को बचाये रखा है। भारत के विश्व प्रसिद्ध साहित्यकार प्रेमचंद साहित्य का स्पश्टीकरण करते हुए कहते हैं कि– ''साहित्य उसी रचना को कहेंगे जिसमें कोई सच्चाई प्रकट की गयी हो, जिसकी भाशा प्रौढ़, परिमार्जित और सुन्दर हो। जिसमें दिल और दिमाग पर असर डालने का गुण हो और साहित्य में युग पूर्ण रूप से उसी अवस्था में उत्पन्न होता है, जब उसमें जीवन की सच्चाइयाँ और अनुभूतियाँ व्यक्त की गई हों।''[1]

साहित्य का अर्थ है– हित सहित या हित के साथ। साहित्य का दूसरा अर्थ 'सहभाव' अर्थात् भाव सहित है। यहाँ भाव का आशय जन कल्याण के भाव से है। साहित्य के मूल में मानव, प्रकृति और चराचर जगत सभी के कल्याण का भाव विद्यमान है। रामचन्द्र शुक्ल जहाँ साहित्य को जनता की चित्तवृति का संचित प्रतिबिम्ब मानते हैं, वहीं बालकृश्ण भट्ट इसे जनसमूह के हृदय का विकास कहते हैं। सरस्वती पत्रिका के यशस्वी संपादक महावीरप्रसाद द्विवेदी साहित्य को ज्ञानराशि का संचित कोश की संज्ञा देते हैं। डॉ0 श्यामसुन्दर दास का कहना है कि– 'काव्य वह है जो हृदय में अलौकिक आनन्द की सृश्टि करे।' छायावाद के मूर्धन्य रचनाकार जयशंकर प्रसाद काव्य को आत्मा की संकल्पनात्मक अनुभूति का नाम देते हैं। आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी अंतःकरण की दीप्तियों का चित्र स्वीकार करते हैं और सुमित्रनन्दन पंत इसे परिपूर्ण क्षणों की वाणी मानते हैं। इस संदर्भ में आचार्य रामचन्द्र शुक्ल अपने निबन्ध 'कविता क्या है?' में इसे और अधिक स्पश्ट करते हुए कहते हैं कि– ''जिस प्रकार आत्मा की मुक्ता की मुक्तावस्था ज्ञानदशा कहलाती है उसी प्रकार हृदय की मुक्तावस्था रसदशा कहलाती है। हृदय की इस मुक्ति साधना के लिए मनुश्य की वाणी जो शब्द विधान करती आयी है उसे कविता कहते हैं।''[2] यहाँ काव्य साहित्य के पर्याय का बोधक है।

पाश्चात्य विद्वानों की दृश्टि में भी साहित्य के केन्द्र में प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से मुनश्य है। प्लेटो जहाँ साहित्य को

*4बी/73, वृन्दावन योजना, लखनऊ